P: ISSN No. 2231-0045 RNI No. UPBIL/2012/55438 VOL.-III, ISSUE-II, November-2014
E: ISSN No. 2349-9435
Periodic Research

नेहरूवादी विरासत : भारतीय जनतन्त्र और समाजवाद (1951–64)

राजेश कुमार शर्मा
असिस्टेन्ट प्रोफेसर,
इतिहास विभाग,
राजकीय महाविद्यालय,
रूधौली, बस्ती

सारांश

आधुनिक भारत के शिल्पकार की 125वीं जयन्ती के अवसर पर जवाहर लाल नेहरू और उनकी विरासत को जिस तरह क्षुद्र राजनीतिक लड़ाई के दलदल में घसीटा जा रहा है, वह किसी भी दृष्टि से उचित नही कहा जा सकता। क्या इंग्लैण्ड के लोग विंस्टन चर्चिल को किसी खास पार्टी से जोड़कर देखते है? क्या अमेरिका के लोग अब्राहम लिंकन और एफ0डी0 रूजवेल्ट जैसी हस्तियों को रिपब्लिकन या डेमोक्रेटिक के तौर पर देखते है ? भारत की जनता और राजनीतिक दलों को यह समझना होगा कि राष्ट्र निर्माताओं को किसी पार्टी विशेष के रंग में नही रंगा जा सकता। जिस आधुनिकता और जनतंत्र पर गर्व करते है उसके हर कतरे के लिए भारत जवाहर लाल नेहरू का ऋणी है। सिर्फ अपने पडोसी देश का हाल देखकर ही हम इस विराट उपलब्धि का मतलब समझ सकते है। लोकतंत्र के विचार को रोपने के लिए भारत को अपने निर्माताओं का और इसे पोषण देने के लिए जवाहर लाल नेहरू का शुक्रगुजार होना चाहिए। यद्यपि नेहरू ने गलतियॉ भी की पर उनके उत्तराधिकारियों ने उन गलतियों को भारी भूल में बदलने में कोई कसर नही छोडी। जो देश कभी वैश्विक व्यापार का केन्द्र था, वह नेहरू के समय में ही बंद अर्थव्यवस्था और लाइसेन्स राज का दंश झेलने को मजबूर हुआ। पर इसके लिए तात्कालीन राजनीतिक परिस्थितियॉ ज्यादा जिम्मेदार थी।

मुख्य शब्द : जनवाद, नागरिक अधिकार, आत्मनिर्भर, भारतीय राष्ट्र ,अर्थव्यवस्था, लोकतन्त्र, धर्मनिरपेक्षता, निर्वाचन, समाजवाद आदि।

लक्ष्य

प्रस्तुत शोध पत्र में हमने नेहरू विरासत के दो प्रमुख स्तंभ जनतंत्र और समाजवाद पर ही ध्यान फोकस करने का प्रयास किया जो आधुनिक भारत के दो प्रमुख मूल स्तम्भ है। जनतन्त्र के स्वरूप के सन्दर्भ में नेहरू ने सदैव धर्मनिरपेक्ष राज्य की परिकल्पना की और एक विशाल प्रचार अभियान चलाकर अल्पसंख्यकों के बीच सुरक्षा की भावना जगाने का कार्य किया। हमने अपने शोध पत्र के माध्यम से यह साबित करने का प्रयास किया है कि जनवादी होने के वावजूद नेहरूजी ने धर्म पर आधारित राजनीतिक संस्थाओं पर रोक लगाने की वकालत की। इस संघर्ष में नेहरूजी को पटेल और राजगोपालाचारी जैसे मित्रों का पूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ।

प्रस्तावना

20वीं शताब्दी के आधुनिक भारतीय इतिहास में जवाहरलाल नेहरू का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। उन्हे आधुनिक भारत का जनवादी, मानवीय और द्रष्टा तो कहना समीचीन होगा ही, वे उससे आगे बढकर कुछ और भी थे। इसलिए उनके कार्य और अद्भूत व्यक्तित्व के आधार पर स्वतन्त्र भारत के निर्माण में उनकी भूमिका का कोई भी मूल्यांकन उतना ही जटिल और कुछ हद तक विवादास्पद होना अवश्यंभावी है। 1951 से 1964 तक का नेहरू का प्रधानमंत्रीत्व काल वस्तुतः परिपक्वता और उपलब्धियों का काल था और यह काल ऊॅची उम्मीद,आकांक्षा तथा सफलता के प्रति उज्जवल,आशावादी मानसिकता और आत्मविश्वास के काल भी रहे है।अप्रैल 1953 में जवाहर लाल नेहरु ये घोषणा कर रहे थे ।

''मै तब तक आराम से नहीं बैठ सकता जब तक कि इस देश में प्रत्येक व्यक्ति को एक न्यूनतम जीवन स्तर की सुविधा और उचित व्यवहार प्राप्त नहीं हो जाती.....आप दस साल और इन्तजार कीजिए और आप पाऍगे कि हमारी योजनाऍ इस देश का नजारा पूरी तरह से ऐसी बदल देगी कि दुनिया भौचक्की रह जाएगी।''[1]

जवाहरलाल नेहरू के प्रधानमंत्रीत्व काल में भारत व्यवहारिक रूप से स्थिर था और इसकी राजनीतिक प्रणाली एक विशिष्ट स्वरूप ग्रहण कर रही थी। इस काल में राजनीतिक और आर्थिक व्यवस्था का भारी पुनर्निमाण आरम्भ हो चुका था। आम लोग यह भी महसूस कर रहे थे कि जनवाद, नागरिक अधिकार, धर्मनिरपेक्षता, वैज्ञानिक और अर्न्राष्ट्रीय दृष्टिकोण तथा समाजवाद के रास्ते पर अग्रसर होने की शुरूआत हो चुकी है। हॉलाकि विकास की धीमी रफ्तार, बेरोजगारी और निर्धनता की समस्याओं तथा भूमि सुधार के क्षेत्र में प्रगति कम थी जिससे बुद्धिजीवी समुदाय में काफी नाराजगी भी थी। देश के मिजाज को प्रतिबिंब करते हुए जवाहरलाल नेहरु ने जून 1955 में लिखा :

''हमारे चारों ओर ढेरों समस्याओं और मुसीबतों के होते हुए भी इस देश में आशा का माहौल बना हुआ है। भविष्य के प्रति एक विश्वास और उन मौलिक सिद्धान्तों में आस्था बनी हुई है जिन्होने हमें यहॉ तक पहुचाया है। सुबह की रोशनी फैल रही है और भारत के दीर्घ और जटिल इतिहास में एक नए युग का सूत्रपात हो रहा है।''[2]

इस प्रकार नेहरू युग में समस्याओं और कमजोरियों के वाबजूद उपलब्धियों और प्रगति के विभिन्न क्षेत्र दिखाई पडते है जिनमें से दो क्षेत्रों पर हमारा ध्यान केन्द्रित है।

जनवाद और नागरिक अधिकारों के प्रति नेहरू का दृष्टिकोण

जवाहरलाल नेहरू की सर्वप्रथम उपलब्धि भारतीय जमीन पर जनवाद की सुदृढ स्थापना करना था। इस जनवाद की स्थापना की शुरूआत 1947 के बाद संविधान निर्माण प्रक्रिया के साथ ही आरम्भ हुआ और 1951–52 के दौरान हुए आम चुनावों में भारतीय जनवाद ने एक महान छलांग लगाई। यह चुनाव पूरी दुनिया में जनवाद के लिए किया गया सबसे बडा प्रयोग था। चुनावों को सफलता पूर्वक संचालित करने के लिए संविधान के प्राविधानों के तहत एक चुनाव आयोग की स्थापना की गई। चुनाव का आयोजन एक भीषण कार्य था। पहले घर घर जाकर 17 करोड मतदाताओं को सवेक्षण द्धारा दर्ज किया गया। 70 प्रतिशत से उपर मतदाताओं को निरक्षर देखते हुए यह व्यवस्था की गई कि उम्मीदवारों की पहचान चुनाव चिन्ह का चित्र बनाकर किया जाए। इस प्रथम आम चुनाव की प्रमुख विशेषता जवाहर लाल नेहरू का शक्तिशाली चुनावी अभियान था। आश्चर्यजनक उर्जा का प्रदर्शन करते हुए उन्होने लगभग 40 हजार किलोमीटर यात्रा की और 03 करोड 50 लाख लोगों को अपने चुनावी दौरे में संबोधित किया। जैसा कि नेहरू के जीवनीकार एस0 गोपाल ने इंगित किया है –

''1947 के पहले जैसे ही इस समय भी नेहरू के सभी भाषण वयस्क शिक्षा कार्यक्रम की तरह थे जिसमें जनता को यह सिखाया गया था कि उनके पास भी दिमाग है और जनता को इसका इस्तेमाल करना चाहिए।''[3] दरअसल जवाहर लाल नेहरू चुनाव अभियान के केन्द्र में थे। यद्यपि विपक्षी दलों ने उन पर हर संभव दिशा से मिलकर आक्रमण किया।[4] नेहरू ने भी अपनी प्रमुखता को समझते हुए लिखा :–

''यह सच है कि कांग्रेस में मेरे रहे बिना न केन्द्र और न राज्यों में कोई स्थिर सरकार बन सकती थी और बिखराव की प्रक्रिया शुरू हो गई होती।''[5]

खास तौर पर उन्होने साम्प्रदायिकता को अपने इस अभियान का केन्द्रीय मुद्दा बनाया। जवाहर लाल नेहरू के शब्दों में इस समय सबसे प्रमुख लडाई धर्मनिरपेक्ष और साम्प्रदायिक ताकतों के बीच है क्योंकि भारत की अखण्डता को सबसे बडा खतरा साम्प्रदायिक ताकतों से ही है। उन्होने चेतावनी दी की – ''यदि उन्हे खुलकर खेलने दिया जाय तो ये भारत को तोड डालेंगे।''[6] उन्होने घोषणा की कि ''..... हम अपनी मौत तक एक धर्मनिरपेक्ष राज्य के लिए वचनबद्ध है।''[7]

स्वतंत्रता संघर्ष की परम्परा को आगे बढाते हुए नेहरू ने स्वतंत्र भारत में संसदीय सरकार और जनवाद को सावधानी से पाला पोसा और उसकी जडे मजबूत की। उन्होने स्वयं तीन आमचुनाव लडे और ये चुनाव स्वतन्त्र, निष्पक्ष और व्यवस्थित ढंग से सम्पन्न हुए। इस नई राजनीतिक व्यवस्था के प्रति आम जनता में भारी उत्साह था। उनके नेतृत्व में चुनाव देश में अपवाद के बजाय नियमित विधान बन गए।

जनवाद और नागरिक अधिकारों के प्रति नेहरू का समर्पण सम्पूर्ण था। उनके लिए ये परम मूल्यों के प्रतिनिधि थे न कि किसी मंजिल तक पहुॅचने के लिए मात्र एक राह। वे इस बात से वाकिफ थे कि संसदीय प्रणाली की अपनी कमजोरियॉ है और कुछ कमजोरियों को उन्होने दूर करने का प्रयास भी किया। परन्तु उन्होने घोषणा की कि –''किसी भी कीमत पर वे जनवादी प्रणाली को नहीं छोडेगे।''[8]

दुनिया के इतिहास में नेहरू एक नायाब मिसाल है जो एक जनवादी होते हुए भी अपनी विशाल लोकप्रियता और शक्ति के कारण भ्रष्ट नहीं हुआ बल्कि उन्होने अपनी शक्ति और लोकप्रियता का उपयोग जनवादी प्रक्रिया, नागरिक अधिकार, और मुक्तिकारी परम्परा को मजबूत बनाने के लिए किया। नेहरू ने ऐसे संस्थागत ढॉचे के विकास में सहयोग दिया जो जनवादी मूल्यों पर आधारित था और जिसमें सत्ता विकेन्द्रित थी।

जनवाद के लिए उनकी प्रतिबद्धता आम आदमी में असीम विश्वास और आदर भाव में गहरी आस्था के कारण थी। उन्होने एक बार कहा था –''यही धर्म मेरे लिए पर्याप्त है।''[9] वे विचारो के स्वतन्त्र बाजार को पूर्ण समर्थन देने के लिए इच्छुक थे क्योंकि उनका विश्वास था कि लंबे दौर में आम लोग विभिन्न विचारों के बीच खुद अन्तर कर निर्णय ले सकते है। साथ ही वे देश और यहॉ तक कि अपनी पार्टी के अन्दर निरंकुशवादी वैचारिक प्रवृतियों को भी अच्छी तरह समझते थे। उन्होने 1951 में कहा –'' हमारा जनवाद एक नाजुक पौधा है जिसे बहुत सावधानी और बुद्धिमता से पालना पोसना होगा।''[10] जब एक पत्रकार ने उनसे पूछा कि भारत के लिए वे क्या विकसित छोड कर जायेगे, तो उन्होने कहा – ''आशा है चालीस करोड ऐसे लोग जो हमारा शासन चलाने के काबिल होगे।''[11]

P: ISSN No. 2231-0045 RNI No. UPBIL/2012/55438 VOL.-III, ISSUE-II, November-2014
E: ISSN No. 2349-9435
Periodic Research

जनवाद नेहरू के विकास का बुनियादी हिस्सा था। जनवाद ही लोगों को इस लायक बनाएगा कि वे अपने को आन्दोलित कर सके और सामाजिक न्याय व समानता और आर्थिक असमानता को कम करने के लिए नीचे से दबाब पैदा कर सके जिसका परिणाम अन्ततः समाजवाद के रूपान्तरण में होगा। वे इस बात के प्रति जागरूक थे कि यह प्रक्रिया लम्बा समय ले सकती है क्योंकि संसदीय प्रणाली और वयस्क मताधिकार ने उन्हें शासन करने का अधिकार तो जरूर दिया था परन्तु अनिवार्य रूप से इसकी शक्ति प्रदान नहीं की थी। पर उनका विश्वास था कि देर सबेर इस अधिकार के पीछे पीछे वह शक्ति भी आएगी और इसके लिए उन्होने अपनी तरफ से भरपूर कोशिश की। यही कारण था कि उन्होने चुनावों, समुदाय विकास परियोजनाओं, पंचायती राज और हर प्रकार की सत्ता के विकेन्द्रीकरण को इतना महत्व दिया था।

जवाहरलाल नेहरू का तर्क था कि भारत जैसे विभिन्नता वाले समाज में जनवाद खासतौर पर आवश्यक है। शक्ति और दबाब की कोई मी मात्रा भारत को एकजुट नहीं रख सकती। विभिन्न सामाजिक–आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक प्रवृतियों को खुलकर अपनी अभिव्यक्ति की छूट देकर ही एक जनवादी राजनीतिक प्रणाली के माध्यम से भारतीय जनता को एकजुट रखा जा सकता है। 1960 में एक सम्भाषण के दौरान नेहरू ने कहा –''आज के भारत में जनवादी पद्धति के विपरीत कोई भी कदम विखण्डन और हिंसा तक ले जा सकता है।''[12]

जवाहर लाल नेहरू अपने प्रयासों के अपूर्व चरित्र को समझते थे और वे यह भी जानते थे कि जनवाद और नागरिक अधिकारों पर आधारित राजनीतिक ढॉचे की नींव पर देश का आर्थिक विकास करना एक अतिकठिन और नया रास्ता है और इस रास्ते से आर्थिक विकास की दर बहुत कम होगी। परन्तु उनका मानना था कि जनवादी राजनीतिक व्यवस्था के लिए भारतीय जनता यह मूल्य अदा करने के लिए तैयार है।

समाजवाद के प्रति नेहरू का दृष्टिकोण

जवाहरलाल नेहरू ने भारतीय समाज के समाजवादी दिशा में बुनियादी रूपान्तरण के लिए कार्य किया। वे इस समस्या पर चिन्तन करते रहे कि कैसे एक अविकसित समाज में जनवादी राजनीति के आधार पर समाजवाद का निर्माण किया जाना चाहिए। नेहरू ने ही समाजवादी दृष्टिकोण को करोडों जनता तक पहुॅचाया और समाजवाद को उसकी चेतना का अंग बना दिया। इसके अलावा समाजवाद के प्रति उनके विचार तथा उसकी स्थापना और विकास के सम्बन्ध में उनकी रणनीति एवं उनका राजनीतिक आचरण, आधुनिक विश्व में समाजवादी रूपान्तरण की समस्या पर गहरी अंतदृष्टि प्रदान करता है।

जवाहरलाल नेहरू के लिए समाजवाद का क्या अर्थ था ? दरअसल वे समाजवाद को निश्चित योजना और कट्टर सिद्धान्तों के सन्दर्भ में कभी परिभाषित नहीं करते थे। वे समाजवाद का अर्थ, बटोरने की मानसिकता का अन्त, मुनाफा की सर्वोच्चता और पूॅजीवादी प्रतियोगिता को त्यागकर सहकारिता और सहयोग की भावना का विकास करना समझते थे।

भारतीय परिस्थितियों में नेहरू समाजवाद को एक घटना के बजाय रूपान्तरण की सतत प्रक्रिया के रूप में देखते थे। इसके अलावा समाजवादी रूपान्तरण को मुख्यतः सामाजिक–आर्थिक ढॉचे के अन्दर सुधारों की श्रृंखला के सहारे पूरा होना था। अचानक किसी खास विस्फोट से नहीं, बल्कि सतत परिवर्तन द्वारा लम्बे कार्यक्रम में पूरा होना था जिसका प्रभाव एक क्रान्ति या आमूल सामाजिक परिवर्तन जैसा ही होता। नेहरू ने इन सुधारों की तुलना शल्य चिकित्सा से की।[13]

जवाहरलाल नेहरू का विश्वास था कि जनवाद और नागरिक अधिकार समाजवाद के बुनियादी तत्व है। राष्ट्रीय आन्दोलनों के अनुभवों के आधार पर धीरे धीरे नेहरू ने यह विचार विकसित किया कि बुनियादी सामाजिक परिवर्तन सिर्फ व्यापक सामाजिक सहमति और बहुसंख्यक जनता की राय से ही पूरा किये जा सकते है। जैसा कि उन्होने 1956 में टीबोर मेर्डे को कहा– ''लोगों को हमें अपने साथ ले चलना होगा। लोगों को परिवर्तन स्वीकार करने के लिए तैयार होना चाहिए। निश्चय ही संसद ऐसा कानून बना सकती है परन्तु यह उससे भी कहीं ज्यादा महत्वपूर्ण है कि – ''जनता का एक विशाल हिस्सा सक्रिय या अप्रत्यक्ष किसी भी रूप में इसे तैयार करने के लिए तैयार रहें।''[14]

दूसरे अवसर पर उन्होने कांग्रेस समितियों के अध्यक्षों को कहा कि वे इसके महत्व से सहमत है कि – ''हम अपने जनता को प्रगति की रेखा पर साथ ले चलें। हम चुनिन्दे लोगों की संकीर्ण संस्था नहीं है। हम भारतीय जनता के साथ साथ चलने वाले यात्री है।''[15] इस दृष्टिकोण के कई महत्वपूर्ण अर्थ निकलते है –

1. सामाजिक रूपान्तरण की प्रक्रिया धीमी हो सकती है। इसके अतिरिक्त दीर्धजीवी और गहरी जडे जमाने के लिए समाजवाद को आम स्वीकृति और जनवादी दृष्टिकोण की बहुत आवश्यकता थी।
2. 1930 के दशक में फॉसीवाद के उदय से सबक सीखते हुए नेहरू ने यह तर्क दिया कि बिना व्यापक सहमति के समाजवाद की तरफ बढाया गया कोई भी कदम फॉसीवादी खतरे को आमंत्रित करना होगा। 1948 में जयप्रकाश नारायण को लिखा कि –''वामपंथ के लिए समय से पहले काई भी प्रयास व प्रतिक्रिया हमें विध्वंस तक ले जा सकती है।''[16]

मोटे तौर पर उन्होने यह महसूस किया कि ग्रामीण और शहरी, दोनों क्षेत्रों के मध्यवर्ती तबके को बहुत सावधानी से संभालने की जरूरत है क्योंकि यह तबका आबादी का एक बहुत बडा हिस्सा है और यही वह तबका है जो यूरोपीय देशों में फॉसीवाद का आधार बना था। फॉसीवाद सिद्धान्तो का ऐसा कोई भी प्रयास भारतीय जनता को अनिवार्यतः बॉट देता जबकि उसकी एकता की आवश्यकता बनी हुई थी जो अब भी दुर्बल ही थी।

नेहरू युग को भारत की एक कमजोर राज्य और नेहरू की एक दुर्बल शासक के रूप में आलोचना की गई है पर नेहरू कभी इस बात से सहमत नहीं हुए क्योंकि वे अतिशक्तिशाली राज्य और महाबली शासक से उत्पन्न निरंकुशतावाद के खतरे से भली भॉती परिचित थे। 1964 में अपनी मृत्यु से ठीक पहले उन्होने कहा था –''किसी की भी

P: ISSN No. 2231-0045 RNI No. UPBIL/2012/55438 VOL.-III, ISSUE-II, November-2014
E: ISSN No. 2349-9435
Periodic Research

चरित्र की विनम्रता और सदव्यवहार को दुर्बलता नहीं समझना चाहिए। वे मेरी दुर्बलता कें लिए मेरी आलोचना करते है पर अनेकानेक बैध विभिन्नताएँ समेटे यह इतना बडा देश है कि यह किसी महाबली व्यक्ति को लोगों और उनके विचारों को कुचलने की इजाजत नहीं दे सकता है।''[17]

3. समाजवाद की तरफ एक खुला दृष्टिकोण अपनाने का एक अन्य कारण यह भी था कि नेहरू यह मानते थे कि एक विशाल आबादी को समाजवाद की किसी कटी छंटी निश्चित अवधारणा के इर्द–गिर्द आन्दोलित करना संभव नहीं था। विशाल आबादी को सिर्फ विभिन्न हितों और अनेक दृष्टिकोणों एवं विचारधाराओं वाले एक साझा समाजवादी दृष्टिकोण और व्यापक दायरे में ही आन्दोलित किया जा सकता है।

समय के दौरान नेहरू ने यह महसूस किया कि एक समाजवादी समाज की स्थापना शान्तिपूर्ण एवं अहिंसक रास्ते से ही हो सकती है। वर्ग संघर्ष के अस्तित्व और महत्व को स्वीकार करते हुए भी उनका विश्वास था कि इसे अहिंसक मार्ग और कानून के शासन के माध्यम से सुलझाया जा सकता है। समाजवाद के प्रति नेहरू के दृष्टिकोण के एक दूसरे पहलू पर भी ध्यान दिए जाने की आवश्यकता है। समय बीतने के साथ साथ वे गॉधीजी के इस विचार के बहुत निकट हो गए कि समाजवादी भारत के निर्माण में राह को भी उतना ही महत्व दिया जाना चाहिए जितना कि मंजिल को। उनके मुताबिक गलत रास्ता कभी भी मंजिल पर नहीं ले जा सकता है। साधन और साधन की अविभाज्यता पर उनका अटूट विश्वास भी एक अन्य कारण था जिससे वे समाजवाद जैसी बेहतरीन मंजिल के लिए भी हिंसा का रास्ता अख्तियार करने को तैयार नहीं थे।

निष्कर्ष

स्पष्ट हैं, स्वतंत्र भारत के प्रथम प्रधानमंत्री होने के नाते नेहरू के सामने चुनौतियों भरे काम पडे हुए थे। इसके वावजूद किसी भी ऐतिहासिक मानदण्ड से उनकी उपलब्धियॉ विशालतम अनुपात में थी। सर्वोपरि उन्होने कुछ मूल्यों, दृष्टिकोणों, आदर्शो, लक्ष्यों और नजरिये को देश में पहचाना।उन्होने इन्हे भारतीय जनता की सांस्कृतिक मानसिकता का अंग बना दिया। जैसे कि उनके एक जीवनीकार, ज्योफ्री टायसन ने लिखा है कि –''यदि नेहरू दूसरी तरह के आदमी होते तो भारत भी दूसरी तरह का देश होता।''[18]

जवाहरलाल नेहरू ने भारतीय राष्ट्र को सुदृढ किया, नागरिक अधिकार और संसदीय जनवाद पर आधारित राजनीतिक व्यवस्था की नींव रखी, भारत को आत्मनिर्भर स्वतंत्र अर्थव्यवस्था के रास्ते पर खडा किया, और वैज्ञानिक दृष्टिकोण को आगे बढाया। उन्होने जनता को एक समाजवादी आदर्श प्रदान किया तथा समता, समानता और समान अवसर पर आधारित एक व्यापक समाजवादी समाज के लक्ष्य को लोकप्रिय बनाया। निश्चय ही नेहरू समाजवाद बनाने में असफल रहे, पर इसमें कोई शक नहीं कि उन्होने समाजवादी सिद्धान्त में कई नए तत्वों का समावेश किया जिन्हे भविष्य के किसी जीवन्त समाजवादी आन्दोलन को अपने में समाहित करना ही होगा। नेहरू और उनका युग अब ऐतिहासिक यादाश्त में दब चुके है– सिर्फ पचास साल से उपर के लोगों को ही नेहरू एक व्यक्ति के रूप मे याद होगें।उनकी सामाजिक दृष्टि, एक प्रसन्न और स्वस्थ समाज के निर्माण के प्रयास से उत्साहित होते है। उन्होने जो विरासत छोडी है, उसे कई मामलों में निराशा के सागर में डूबते–उतरते भारतीय जनता अपना पतवार मानती है। जनता अपने नेता से इससे ज्यादा क्या मॉगती है। आखिरकार क्या किसी भी समाज, किसी भी जनता को अपने नेता से, चाहे वह कितना भी महान हो, यह मॉगने का हक है कि वह सभी समस्याओं को हमेशा–हमेशा कें लिए समाप्त कर दे।

वास्तव में नेहरू का हर विचार आज भी अपनी प्रासंगिकता रखता है। जवाहरलाल नेहरू अपनी पूरी जिन्दगी जड सिद्धान्तों और जडवादी मानसिकता का विरोध करते रहे। धर्म का विरोध करने का उनका यह प्रमुख आधार था और यही जीवन और इसकी समस्याओं के प्रति वैज्ञानिक दृष्टिकोण और प्रवृति के पक्षधर होने का प्रमुख आधार था। सामूहिकता की उनकी सोच और तकनीकी जरूरत पर उन्होने जो बल दिया वह आज भी अर्थव्यवस्था को गति दे रही है। नेहरू ने हमलोगो को गर्व करने की सिर्फ वजह ही नही दी, दुनिया में भारत के मुकाम को लेकर एक खास नजरिया भी दिया। लेकिन अफसोस इसका है कि उनकी विरासत को संभाल के नही रखा जा सका। जवाहर लाल नेहरू ने हमें ''भारत का विचार'' दिया और वह सभी भारतीयों के लिए है।

सन्दर्भ

1. एस0गोपालः जवाहरलाल नेहरू : ए बायोग्राफी लंदन 1984जिल्द 02 पृ0 200
2. जवाहरलाल नेहरू, लेटर्स टू चीफ मिनिस्टस जिल्द 04 पृ0 288
3. एस0गोपालःजवाहरलाल नेहरू : ए बायोग्राफी, लंदन 1984जिल्द 02 पृ0 246–49
4. एस0गोपालःजवाहरलाल नेहरू : ए बायोग्राफी लंदन, 1984जिल्द 02 पृ0 164
5. एस0गोपालःजवाहरलाल नेहरू : ए बायोग्राफी लंदन, 1984जिल्द 02 पृ0 164–65
6. जवाहरलाल नेहरू, लेटर्स टू चीफ मिनिस्टर्स जिल्द 02 पृ0 508
7. नेहरू ऑन कम्युनिलिज्म सम्पादक– एन0एल0गुप्ता, नई दिल्ली,1965 पृ0 216
8. करंजिया, आर0के0ः द फिलोसोफी ऑफ मि0 नेहरू, लंदन, 1966 पृ0 123
9. एस0गोपालः जवाहरलाल नेहरू : ए बायोग्राफी लंदन, 1984जिल्द 03 पृ0 170
10. जवाहरलाल नेहरू,लेटर्स टू चीफमिनिस्टर्स जिल्द 02 पृ0 368
11. एस0गोपालः जवाहरलाल नेहरू : ए बायोग्राफी जिल्द 03 पृ0 278
12. करंजिया, आर0 के0ः द माइण्ड ऑफ मि0 नेहरू, लंदन, 1960 पृ0 48
13. नेहरू आन कम्यूनलिज्म, सम्पा0– एन0एल0 गुप्ता, नई दिल्ली, 1965 पृ0 217
14. टीबोर मेण्डेः कन्वरसेशन्स विथ मि0 नेहरू लंदन 1956 पृ0 37,108,105
15. एस0 गोपालः जवाहरलाल नेहरू : ए बायोग्राफीलंदन, 1979जिल्द 02 पृ0 192–93
16. सेलेक्टेड वर्क्स ऑफ जवाहरलाल नेहरू, सेकेण्ड सीरीज, जनरल स्डीटर, एस0 गोपाल, दिल्ली, 1998 जिल्द 07 पृ0 384
17. करंजिया, आर0के0ः द फिलोसोफी ऑफ मि0 नेहरू, लंदन, 1966 पृ0 139
18. ज्योफ्री टायसनःनेहरू : द इयर्स ऑफ पावर, लंदन, 1966 पृ0 173